चुनौतियों से जूझने का दूसरा नाम है खुश्बू दोशी

शिवेन्द्र प्रकाश द्विवेदी

हर इन्सान एक सपना देखता है अपने मन चाहे कैरियर के सफल निर्माण का, और यदि यह कैरियर सफलता पूर्वक निर्मित हो रहा हो फिर अचानक से उस भरे पूरे कैरियर को छोड़ कर लौटना पड़े तथा जाना पड़े एक ऐसी दिशा मे जिनके रास्तों के बारे में इन्सान बिल्कुल अनजान हो तो एक बारगी कैसा लगेगा?

निश्चित रूप से आम इन्सान के लिए यही एहसास एक बडा सवाल बन कर खडा हो जायेगा उसे हताशा और निराशा के अन्धकूप मे ढकेलने के लिये। बावजूद इसके करोड़ों इन्सानों के बीच कुछ खास लोग होते हैं, जो हर हाल मे निर्णायक होते हैं, सुलझे हुए दिमाग से गम्भीर फैसले लेना और भय, हताशा व निराशा को तलवे से रौदते हुये खुद के अन्दर आशा विश्वास सद्भाव प्रेम की लौ जलाये अपने विजय पथ की तरफ आगे बढ़ जाना ऐसे लोगो का शगल होता है। इन्ही लोगो में गर्व से दमकता हुआ एक नाम है खूश्बू दोशी।

प्रत्येक इंसान की तरह खुश्बू ने भी एक सपना देखा था और उसे साकार करने के लिए उन्होने आर्कीटेक्चर किया, फिर लंदन से इंडस्ट्रियल डिजाइनिंग का कोर्स शुरू किया, कैरियर के इसी पड़ाव पर पिता चन्द्र कान्त दोशी की अस्वस्थता को देखते हुये उनकी इस इकलौती संतान खुश्बू ने यह फैसला किया कि उन्हे पिता की देखभाल एवं सेवा के लिए हर हॉल में राजकोट में रहना चाहिये, मात्र 21 वर्ष की उम्र में खुश्बू के इसी गम्भीर और निर्णायक फैसले ने उनके सपनो की दिशा मोड़ दी। वे राजकोट वापस आ गयीं, और पिता की सेवा करने के साथ अपने चाचा राजेश दोशी और पिता चन्द्रकान्त दोशी की मेहनत से खड़ी की गयी कम्पनी राजू इंजिनियर्स के कार्यो में हाथ बंटाने लगी, निश्चित रूप से यहाँ खुश्बू के लिए बिल्कुल नये क्षेत्र मे काम करना बड़ी चुनौती थी ।

लेकिन पितृ प्रेम के आलोक में उन्होने इस नये रास्ते पे अपना एक मजबूत कदम रखना शुरू किया, मजबूत लीडरशिप स्केल और अपने अन्दर सीखने के अदभुत क्षमता

की वजह से उन्होने चन्द ही समय में इस अचीन्हे बिजनेस की हर बारीकीयों पर अपनी मजबूत पकड़ हासिल की। करीब दो वर्ष बाद जब खुश्बू से पूछा गया कि आपको ऐसी कौन सी जिम्मेदारी दी जाये जिसे आप सरलता से निभा सकें। तो उन्होंने एक दिन सोचने का वक्त मांगा और लोगो को हैरत मे डालते हुये आफ्टर सेल्स सर्विस की जिम्मेदारी सम्हालने की बात कही। बताते चलें कि मशीनरी व्यवसाय मे आफ्टर सेल सर्विस बेहद महत्वपूर्ण होंने के साथ ही सबसे चुनौती भरा काम होता है। पिता चन्द्रकान्त दोशी और चाचा राजेश दोशी ने इस चुनौती भरे कार्य की तरफ इशारा करते हुये खुश्बू को यह समझाने की बहुत कोशिश की कि वह उसके जगह कोई दूसरा काम संभाल ले, परन्तु खुश्बू के लिए उस काम का मायने ही क्या था जिस काम में कोई चुनौती ही न हो। और फिर खुश्बू ने इस कठिन काम को मेहनत और लगन से इतनी सरलतापूर्वक निभाया कि तमाम लोग उनके कार्यों के प्रशंसक हो गये। वर्ष 2013 में खुश्बू के पिता चन्द्रकान्त दोशी ने जीवन की अन्तिम सांस ली, परन्तु आखिरी वक्त उनके चेहरे पर संतोष की यह छाया थी कि वे खुश्बू दोशी के सुयोग्य हाथों में कम्पनी के भविष्य की कमान सौप के जा रहें हैं। आज के दौर में महिलायें जो खुद को पुरूषों की अपेक्षा समाज मे कमजोर व अक्षम समझती हैं उन्हे खुश्बू दोशी से प्रेरणा मिल सके इसलिये आइये जानते है प्लास्टिक इंडस्ट्री के इस उदीयमान नक्षत्र से उन्ही के शब्दों में उनकी सोच और उनके सपनों के बारे में–

अपने बारे में – मैने जब बिजनेस ज्वाइन किया था तब बस एक ही एजेंडा था पापा के साथ रहना है आज इस बात को आठ साल हो गये अभी मै कंपनी मे आफ्ट्र सेल सर्विस यानि कस्टमर सपोर्ट जो होता है वह देखती हूँ, मार्केटिंग एण्ड कम्युनिकेशन देखती हूँ।

सब कुछ यहीं इंडस्ट्री मे रहकर सीखा– खुश्बू बताती है कि मैने इंडस्ट्री से बहुत कुछ सीखा क्योंकि मेरी बैकग्राउंड प्लास्टिक नही थी प्लास्टिक कहते किसको है यह भी इसी इंडस्ट्री ने सिखाया है, इतने बड़े–बड़े मशीन बनते कैसे हैं चलाते कैसे हैं यह सारी चीजें मैने यही रहकर ही सीखी हुई है, क्योकि बहुत सारे बड़े लोग जो इस इंडस्ट्री में जमे हुये हैं मै तो इनके लिए एक बच्ची सी हूँ तो मैने इन सब लोगो से सीखा और यह महसूस किया कि दुनिया में बहुत सारे मैटेरियल प्लास्टिक रिप्लेस कर सकता है। इन सबसे मेरी इस इंडस्ट्री मे बड़ी दिलचस्पी हुई, सही बोलें तो यह गजब का

एक कार्यक्रम के दौरान गुजरात की मुख्यमंत्री आनन्दी बेन पटेल के साथ खूश्बू दोशी